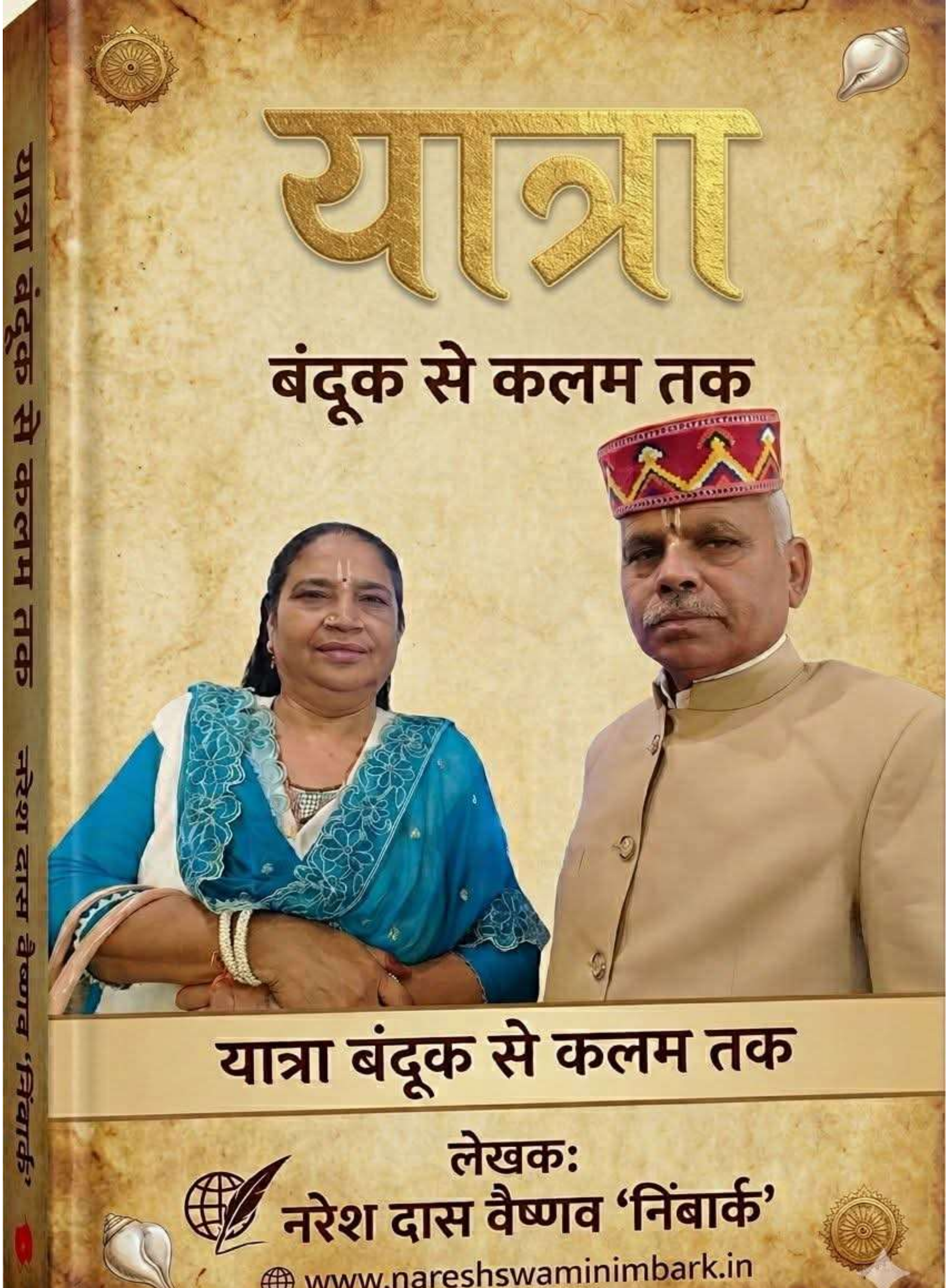

यात्रा
बंदूक से कलम तक
यात्रा बंदूक से कलम तक
लेखक:
नरेश दास वैष्णव 'निंबार्क'
www.nareshswaminimbark.in
यात्रा बंदूक से कलम तक नरेश दास वैष्णव 'निंबार्क'

समर्पण

यह कृति

भारत माता के पावन चरणों में

सादर समर्पित है–

जिसकी माटी ने क्रांति को जन्म दिया

और जिसकी आत्मा ने

सनातन संस्कृति को अक्षुण्ण रखा।

साथ ही यह ग्रंथ

सनातन वैष्णव बैरागी समाज को सादर समर्पित है–

उस त्यागी, तपस्वी और वीर परंपरा को,

जिसने धर्म की रक्षा हेतु आवश्यकता पड़ने पर शस्त्र उठाए

और समय आने पर कलम के माध्यम से

राष्ट्रचेतना को जाग्रत किया।

"बंदूक से कलम तक" की यह यात्रा

केवल एक व्यक्ति की जीवन-गाथा नहीं,

बल्कि उस सनातन संघर्ष की अभिव्यक्ति है

जहाँ अटूट तपस्या भी थी

और राष्ट्र रक्षार्थ क्रांति भी।

कॉपीराइट (Copyright)

पुस्तक का शीर्षक: यात्रा: बंदूक से कलम तक

लेखक: नरेश दास वैष्णव निम्बार्क

प्रथम संस्करण: 2026

प्रकाशक: स्व-प्रकाशित (Self-published)

स्थान: रामनगर, गन्नौर, सोनीपत, हरियाणा - 131039

वेबसाइट: www.nareshswaminimbark.in

भूमिका

सनातन धर्म केवल व्यक्तिगत आस्था की परिधि नहीं है, अपितु यह कर्तव्य, संयम और निःस्वार्थ सेवा के मूलभूत सिद्धांतों से निर्मित एक शाश्वत जीवन-दर्शन है। इसी विराट सनातन चेतना की कोख से पावन वैष्णव परंपरा का प्राकट्य हुआ, जहाँ भक्ति के भाव और वैराग्य के तप के साथ-साथ 'कर्म' को ही ईश्वर की सबसे बड़ी साधना स्वीकार किया गया है। यह पुस्तक उसी वैष्णव दृष्टि और एक सैनिक के जीवन-मंथन से निकले आत्म-अनुभवों का एक श्रद्धापूर्ण संकलन है।

मेरे व्यक्तित्व का निर्माण वैष्णव संस्कारों से अभिसिंचित ग्रामीण परिवेश और वैष्णव बैरागी संप्रदाय की उस प्राचीन साधना पद्धति के बीच हुआ है, जो हमें धर्म के प्रति अडिग रहना सिखाती है। यहाँ वैराग्य का अर्थ संसार से पलायन या उत्तरदायित्वों से मुख मोड़ना नहीं है, बल्कि संसार की आपाधापी में रहते हुए भी 'आसक्ति-रहित' होकर अपने कर्तव्यों का कुशलतापूर्वक निर्वहन करना है। योगेश्वर श्रीकृष्ण की अनन्य भक्ति और निष्काम कर्मयोग–यही वैष्णव मार्ग की वास्तविक और शाश्वत पहचान है।

इस ग्रंथ के पन्नों में भारतीय सैन्य जीवन का वह कठोर अनुशासन और त्याग भी पूरी जीवंतता के साथ समाहित है, जिसने मुझे हर कदम पर यह सिखाया कि राष्ट्र-सेवा मात्र एक पद या कर्तव्य नहीं, बल्कि धैर्य और आत्म-बलिदान की एक निरंतर चलने वाली पराकाष्ठा है। सीमा पर सजग खड़ा एक सैनिक और मठ-मंदिरों की एकांत साधना में लीन एक वैष्णव, इन

दोनों का अंतिम ध्येय और गंतव्य एक ही है–अपने पुरुषार्थ और तपस्या से धर्म एवं राष्ट्र की सुरक्षा सुनिश्चित करना।

भारत माता के प्रति अडिग समर्पण और श्रीहरि के चरणों में अटूट श्रद्धा, मेरी इस संपूर्ण जीवन-यात्रा के दो अभिन्न स्तंभ रहे हैं। चाहे वह युद्धभूमि की भीषण विभीषिका हो या जीवन की डगर पर आए अनगिनत संघर्ष, वैष्णव चेतना ने सदैव मुझे संतुलन, करुणा और न्याय का मार्ग दिखाया है। यह पुस्तक उन ऐतिहासिक क्षणों की मौन साक्षी है जहाँ 'बंदूक' की गरज और 'कलम' की शांति, दोनों का एकमात्र लक्ष्य केवल और केवल सत्य की स्थापना रहा है।

लेखक की बात

यह पुस्तक मात्र एक व्यक्ति की जीवन-कथा या संस्मरणों का संग्रह नहीं है, बल्कि यह उस सनातन चेतना की अविरल और पवित्र धारा का एक विनम्र स्मरण है, जो युगों-युगों से भारतवर्ष की आत्मा को आलोकित और जीवंत रखे हुए है। "यात्रा: बंदूक से कलम तक" के माध्यम से मैंने अपने निजी अनुभवों के झरोखे से वैष्णव बैरागी परंपरा, महान पूर्वजों के त्याग, उनकी तपस्या और राष्ट्र-धर्म की उसी सुप्त चेतना को पुनः शब्द देने का एक लघु प्रयास किया है।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि जब-जब इस पावन संस्कृति और अखंड राष्ट्र पर संकट के काले बादल छाए, तब-तब वैष्णव बैरागी समाज ने केवल उपदेशों और मालाओं से नहीं, बल्कि अपने रक्त और सर्वोच्च बलिदान से धर्म की रक्षा की है। इस पुस्तक की रचना के पीछे मेरा मुख्य उद्देश्य उन विस्मृत वैष्णव क्रांतिकारियों, वीर योद्धाओं और अमर शहीदों की गौरवगाथाओं को एक सूत्र में पिरोना है, जिन्हें समय के साथ इतिहास की मुख्यधारा में वह उचित स्थान और सम्मान प्राप्त नहीं हो सका, जिसके वे वास्तव में अधिकारी थे।

मेरे लिए वैराग्य का अर्थ 'अनासक्त कर्म' है—यही इस संपूर्ण पुस्तक का मूल संदेश और दर्शन है। हमारे पूर्वज बैरागियों ने सदैव भक्ति को शक्ति से और आत्म-साधना को राष्ट्र-शौर्य से जोड़कर देखा। 1857 की प्रथम स्वतंत्रता क्रांति से लेकर भारत के स्वाधीनता के महासमर तक, इस वीर समाज ने 'धर्म-रक्षा' को ही 'राष्ट्र-रक्षा' का पर्याय माना। इसी संकल्पबद्धता का

आधुनिक साक्ष्य श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन है, जिसमें वैष्णव संतों और भक्तों की भूमिका अत्यंत ऐतिहासिक, निर्णायक और वंदनीय रही है।

मेरी व्यक्तिगत जीवन-यात्रा भी इन्हीं महान मूल्यों के बीच विकसित हुई है। जीवन के एक कठिन मोड़ पर जब अन्याय और अधर्म के विरुद्ध हाथ में 'बंदूक' उठी, तब वह मन का कोई व्यक्तिगत प्रतिशोध नहीं, अपितु एक सैनिक का धर्म-रक्षा हेतु लिया गया संकल्प था। किंतु, पूज्य संतों के सान्निध्य और श्रीमद्भगवद्गीता के अमर संदेश ने मुझे यह बोध कराया कि वास्तविक, स्थायी और वैचारिक परिवर्तन केवल 'कलम' की शक्ति और विचारों की शुद्धता से ही संभव है।

मैं पाठकों से केवल इतना सविनय निवेदन करना चाहता हूँ कि इस कृति को किसी राजनीतिक चश्मे या संकीर्ण विचारधारा से न देखें, बल्कि इसे एक सनातनी सैनिक की आत्मा की पुकार समझकर पढ़ें।

– नरेश दास वैष्णव 'निम्बार्क'

(पूर्व नायब सूबेदार, भारतीय सेना)

www.nareshswaminimbark.in

विषय-सूची

खंड 2: तीर्थाटन और दिव्य दर्शन (धार्मिक यात्राएं)

खंड 3: काव्यांजलि (मेरी कविताएं)

खंड 1: शौर्य और गौरवगाथा

अध्याय - 1

नींव का पत्थर: ग्वालियर का वह 'वीर-द्वार' और मेरी कलम का जन्म

इतिहास अक्सर महलों की चौखट पर जाकर दम तोड़ देता है, लेकिन सच आज भी उन मठों और अखाड़ों की धूल में सुरक्षित है जहाँ 'माला' और 'भाला' एक साथ तपस्या करते थे। मेरी यात्रा 'बंदूक से कलम तक' की शुरुआत किसी पुस्तकालय के बंद कमरों में नहीं, बल्कि ग्वालियर की उस पवित्र माटी से हुई, जहाँ आज भी हवाओं में 1857 के बारूद की गंध और संतों के बलिदान की गूंज सुनाई देती है।

जब मैं अपनी धर्मपत्नी श्रीमती निर्मला वैष्णव के साथ ग्वालियर के उस ऐतिहासिक 'बैरागी द्वारे' (महंत गंगादास की शाला) में प्रविष्ट हुआ, तो जो दृश्य देखा उसने हम दोनों को भीतर तक झकझोर दिया। निर्मला जी इस पूरी खोजपूर्ण यात्रा में मेरी छाया बनकर साथ रहीं और उन्होंने उस मर्म को करीब से महसूस किया जिसे मैं शब्दों में पिरोने का प्रयास कर रहा हूँ।

इतिहास का वह स्वर्णिम और रक्त रंजित पन्ना

18 जून, 1858 का वह दिन याद कीजिए, जब झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई अंग्रेजों से लोहा लेते हुए घायल अवस्था में इसी बैरागी छावनी में लाई गई थीं। उनके गुरु, महान क्रांतिकारी संत महंत गंगादास जी वहाँ के पीठाधीश्वर थे। रानी के अंतिम शब्द आज भी इतिहास की दीवारों पर दर्ज हैं– "गुरुदेव! ये गोरे फिरंगी मेरे शरीर को हाथ न लगा सकें।"

महंत गंगादास जी ने विलंब नहीं किया। उन्होंने अपने 1500 बैरागी सैनिकों को आदेश दिया। उस समय जब साधारण जनता के पास चाकू तक नहीं था, हम वैष्णव बैरागियों के पास अपनी 'तोपें' थीं, जो आज भी वहाँ सुरक्षित हैं और हर विश्वकर्मा दिवस पर उनकी गर्जना सुनी जा सकती है। उन जांबाज संतों ने रानी की देह की रक्षा के लिए वह घेरा बनाया कि अंग्रेजों की विशाल सेना भी उसे भेद न सकी।

रानी का अंतिम संस्कार उसी परिसर में बाबा गंगादास की कुटिया की घास-फूस से किया गया। 745 बैरागी योद्धाओं ने एक ही दिन में अपने प्राणों की आहुति दे दी। वे न तो किसी राजसी वैभव के भूखे थे, न ही उनके पीछे रोने वाला कोई परिवार था; वे तो विरक्त थे, जिनका घर भी राष्ट्र था और परिवार भी राष्ट्र।

गद्दारी का फल और वैराग्य का तिरस्कार

परंतु, नियति का क्रूर मजाक देखिए। 18 वर्षों के शोध में मैंने और निर्मला जी ने एक कड़वा सत्य अनुभव किया–जिसने राष्ट्र के साथ जितनी बड़ी 'गद्दारी' की, उसका वैभव उतना ही बढ़ता गया, और जिन्होंने अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया, उनके नाम की एक ईंट भी आज शहर के किसी चौराहे पर सुरक्षित नहीं है।

ग्वालियर की उन गलियों में पाँच दिनों तक भटकने के बाद मेरी रूह काँप उठी, जब मैंने देखा कि न तो उन 745 शहीदों के नाम का कोई पार्क है, न कोई सड़क। जिन शस्त्रों ने अंग्रेजों के दांत खट्टे किए थे, उन पर आज कब्जे हो चुके हैं।

यहीं से 'कलम' ने आकार लिया

सेना की 24 साल की नौकरी में मैंने सीमा पर 'बंदूक' से दुश्मन को रोकना सीखा था, लेकिन ग्वालियर की उस उपेक्षा ने मुझे सिखाया कि वैचारिक और ऐतिहासिक दुश्मन को रोकने के लिए 'कलम' उठाना अनिवार्य है। यह पुस्तक कोई काल्पनिक कथा नहीं है, यह उन प्रमाणों (Proofs) और आरटीआई (RTI) से निकले तथ्यों की गूंज है, जिन्हें जानबूझकर दबाया गया।

मैं भी उसी बैरागी परंपरा की रगों का हिस्सा हूँ। अब इस आयु में मेरा ध्येय यश पाना नहीं, बल्कि उन 'बेनाम' योद्धाओं को उनका हक दिलाना है। यह अध्याय उन 745 बैरागी शहीदों को समर्पित है, जो अपने साथ अपनी झोपड़ी और अपना नाम तक ले गए, पर इस देश के लिए एक ऐसा 'सनातन सुरक्षा कवच' छोड़ गए जिसे कोई मिटा नहीं सकता।

– नरेश दास वैष्णव 'निम्बार्क'
(पूर्व नायब सूबेदार, भारतीय सेना)

अध्याय - 2

अखाड़ों की गुप्त युद्ध कला और सैन्य संरचना

अखाड़ों के भीतर की दुनिया केवल माला जपने तक सीमित नहीं है। एक पूर्व सैनिक के नाते जब मैंने इनके 'अंग-कसरत' और 'शस्त्र-अभ्यास' को देखा, तो मुझे प्राचीन भारतीय गुरिल्ला युद्ध पद्धति की झलक मिली। यहाँ 'पटेबाजी', 'लाठी-संचालन' और 'मल्लयुद्ध' की वे तकनीकें आज भी जीवित हैं, जो कभी मुगलकालीन और ब्रिटिश सेनाओं के छक्के छुड़ाने के काम आती थीं।

इन अखाड़ों का नेतृत्व 'श्री महंत' करते हैं, जो एक सेनापति की भांति अपने खालसों और जत्थों का संचालन करते हैं। कुंभ के दौरान जब इन अखाड़ों की 'रमत' (सैन्य मार्च) निकलती है, तो वह दृश्य आज भी यह याद दिलाता है कि सनातन धर्म की रक्षा के लिए 'शास्त्र' और 'शस्त्र' का समन्वय कितना अनिवार्य है।

नागा योद्धा: वह मौन रक्षक दल

इन तीन अनी अखाड़ों के अंतर्गत आने वाले नागा साधु वास्तव में सनातन धर्म के 'कमांडो' हैं। वे संसार से पूर्णतः विरक्त होकर अपनी देह पर भस्म मलते हैं, लेकिन उनकी आँखें सदैव धर्म के शत्रुओं पर सजग रहती हैं। 1857 के गदर में जब झांसी की रानी लक्ष्मीबाई को सुरक्षित मार्ग देना था, तब इन्हीं नागा योद्धाओं ने अपने प्राणों की परवाह किए बिना वह

अभेद्य सुरक्षा घेरा बनाया था। वे किसी प्रशंसा के मोहताज नहीं थे, इसीलिए इतिहास ने भी उन्हें हाशिए पर धकेल दिया।

1882 की जनगणना और पहचान का षड्यंत्र

ब्रिटिश हुकूमत इस 'बैरागी शक्ति' से भयभीत थी, क्योंकि वे जानते थे कि संन्यासियों और बैरागियों को किसी लोभ या डर से झुकाया नहीं जा सकता। इसीलिए 1882 की जनगणना में 'बैरागी' को एक संकुचित जाति का जामा पहना दिया गया, ताकि उनकी 'योद्धा' पहचान को धुंधला किया जा सके। सच्चाई यह है कि बैरागी कोई जाति नहीं, बल्कि एक 'वैचारिक और सैन्य क्रांति' थी।

आज की पीढ़ी के लिए संदेश

ग्वालियर के वे 745 बैरागी शहीद आज हमसे प्रश्न पूछ रहे हैं कि क्या हमने उनके बलिदान को केवल कुछ पन्नों तक सीमित कर दिया है? वे कहीं लुप्त नहीं हुए, वे आज भी हमारे अखाड़ों की परंपराओं में, कुंभ की रेती में और हर उस व्यक्ति के भीतर जीवित हैं जो राष्ट्र के लिए जीने का संकल्प रखता है।

पुस्तक प्राप्ति

यह पुस्तक Amazon पर उपलब्ध है। नीचे दिए गए लिंक से ऑर्डर करें:

https://amzn.in/d/03ObrTeR

लेखक से संपर्क करें:

www.nareshswaminimbark.in

रामनगर, गन्नौर, सोनीपत, हरियाणा - 131039

॥ जय श्री राधे ॥